संपादकीय

खाद्य बिल या वोट बिल

खाद्य सुरक्षा बिल एक ऐसी पार्टी की महत्वकंशी योजना है द्य जिसके प्रधानमंत्री खुद अर्थशास्त्री है द्य कोई भी राजनैतिकदल जब चुनावों मे जाता हैद्य तो जनता से लोंक लुभावने वायदे करता हैद्य इस बात से इनकार नहीं दिया जा सकता द्यखाद्य सुरक्षा बिल सबसे पहले छक। ने अटल बिहारी वाजपेयी जी के जन्मदिन पर घोषणा की तब 1 करोर लोगों को सुरक्षा मैं लाने का प्रावधान रखा द्यदुसरे ही वर्ष मैं 50 लाख लोगों को लाकर यह संख्या 1 करोर ए50 लाख हो गईद्य तब यही कांग्रेस हो हल्ला मचाकर विरोध करती रही और यह योजना सरकारी दूसरी घोषणाओं व योजनाओं की तरह ठन्डे बसते में चली गई द्यइसबार अचानक कांग्रेस को चुनाव मैं यह बिल याद ही नहीं आया द्य बल्कि चुनावों से ठीक पहले न्छ। के घटकदलों व विपक्ष से चर्चा करे बिना अध्यादेश तक ले आईद्य

सवाल ये उठता है एआजादी के बाद भारत मे योजनाये तो अनेक बनी ण्पर परवाना कितनी चढ़ी ध् यही हाल खाद्य सुरक्षा बिल का है द्य क्योंकि मूलभूत जमीनी ना होकर यें बिल पूरीतरह से चुनावी घोषणा से प्रेरित है। इस मे गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन करने वाला यह गरीब कौन है द्य इसमे आज भी संशय है कॉंग्रेस गत केन्द्रीय सरकार की सोच तो देखिए द्य गरीब कौन यह मालूम करने के लिए एक साल मे तीन , तीन कमेटिया बना डाली और सभी के सुर मे आपस मे विरोध है द्य कोई खुराग को आधार बना रहा हैएतो कोई रोजकी आमदन को हर बार मानसून मे खुले आकाश मे खराब होते अनाज पर सुप्रिम कोर्ट फ्टकार तक लगा चूका हैद्य हजारोंए लाखोंए करोड़ रुपये खर्च कर कृषि को उन्नत करने का ढकोसला किया जाता हैएपर कितना जागृत हो पाया है किसान ध् उत्पादन और आपूर्ति मे साफ अंतर नजर आता है द्य आकड़ों पर अगर गौर फ्त्माएं तो दुनियां भर मे पिछले साल एक अरब दो लाख लोग भुखमरी का दंश झेल रहे थेद्य इस वर्ष यह अकड़ा घटाकर 92 लाख 50 हजार पहुँच गया द्यएक तरफदुनिया मे भूखे लोगों की तादाद घटी है वही दूसरी और भारत मे इसकी संख्या बढ़ना कॉंग्रेस नित सप्रंग सरकार के लिए शर्म की बात हैद्य पर सरकार क्यों शर्म आए ध् इस सवेदन शील मुद्दे को चुनाव मैं जाने से पहले बिना सोचे समझे वतानाकुल कमारोंमें भरे पेट बैठ कर चुनाव जीतने की जुगत लड़ाने के कई हथियारों मै से एक है श्खाद्य सुरक्षा बिल श्एक्या कहे ण्ण्ण्ण्ण्हमारे प्रधान मंत्री ण्ण्ण्ण्ण् प्रधान मंत्री वह अर्थशास्त्री बाद मे है पहले कॉंग्रेस के वफ्फ़दार सिपाही।

=ऋतू कपिल

व्यक्तित्व- वीरेंदर मीणा

एक जुझारू पुलिस अधिकारी ,1987 वो पुलिस सेवा में आये उनके कार्यों ने उन्हें आपने विभाग में तो लोकप्रिय बनाया ही, साथ मे लोगो का कानून पर विश्वास बढ़ाने में मदद की इसी के साथ वो उन्नति लेकर 1997 में इंस्पेक्टर बने ,अलग अलग विभागों व पुलिस स्टेशनों में कार्य करने के साथ साथ I B सुरक्षा ß A C B में कार्यरत रहे। उनके प्रदर्शन को देखते हुए एक बार फीर वीरेंदर मीणा उन्नति के साथ D Y S P पद पर जयपुर शहर में कार्य करेंगे।

विश्व स्तरीय कृषि प्रदर्शनी 16 व 17 जुलाई को मुंबई में

मुम्बई। यू.बी.एम इंडिया द्वारा आयोजित 4 वार्षिक क्रोप वर्ल्ड प्रदर्शनी 16 व 17 जुलाई को आयोजित होने जा रही है। पिछले तीन वर्षों की परम्परा के अनुसार इस बार भी इस विश्व स्तरीय प्रदर्शनी में, एग्रो केमिकल्स, बीज, कृषि व्यवसाय, जैव उर्वरक एवं जैव कीटनाशक उद्योग के 200 से भी अधिक महत्वपूर्ण निर्णय निर्माताओं को एक साथ लाने का प्रयास रहेगा। यू.बी.एम मिडिया अधिकारी श्वेता ने जानकारी देते हुए बताया कि प्रदर्शनी में उद्योगपति, सरकारी एवं गैर सरकारी संगठनों, किसान संघो के प्रमुख एवं अनुसंधान वैज्ञानिक भारत में बढ़ती खाद्य सुरक्षा की चिंता के साथ साथ कृषि उद्योग में प्रमुख चुनोतियों पर सम्बोधित करेंगे। एग्रो केमिकल उद्योग का आकार वर्ष 2017 में अपने वर्तमान आकार से दोगुना हो जायेगा इस उम्मीद के साथ एग्रो केमिकल्स उद्योग संभावना उज्वल देख रहे है। के.आर. वेंकटाद्री, सी.ई.ओ. रैलीज इन्डिया बढती बाजार की संभावनाओं एवं लाभ प्रदता बढाने पर व्याख्यान देंगे। डा. ए.बी. धुरी वाइस प्रेसिडेन्ट, एक्सेल क्रोप केयर भी अपने विचार व्यक्त करेंगे श्वेता ने बताया कि क्रोप वर्ल्ड 2013 मे रासी सीडस के सी.ई.ओ. डा. अरविन्द कपूर जैव प्रोद्योगिकी के माध्यम से फसल की उपज बढाने पर दृष्टि डालेंगे। यू.बी.एम. इंडिया क्या है।यू.बी.एम. इंडिया, यू.बी.एम, पी.एल.सी. की सहायक कम्पनी है जो कि विश्व में दूसरा सबसे बडा स्वतंत्र प्रर्दशनी आयोजक है तथा भारत में अलग अलग 26 स्थानों पर व्यापारीक प्रर्दशनी करने वाला सबसे बडा आयोजक है। कम्पनी भारत भर में क्रोनफ्रेंस कार्यक्रमों को पत्र पत्रिकाओं में भी प्रकाशित करती है। सृष्टी एग्रो बना यू.बी.एम. इण्डिया के क्रॉप वर्ल्ड का मीडिया पार्टनर।

UDIT OVERSEAS PVT. LTD
137, INDUSTRIAL AREA DEHRA, TEHSIL-CHOMU

PRODUCTS

- Zyme
- Bio Fungicide
- Micronutrients
- Bactericide
- Bio Insecticide
- Bio Stimulants
- Growth Promoters
- Mixture
- Wetting Agent
- Tonic
- Secondary Nutrients

We Welcome Your Inquiry.....

CONTACT: 09660258447

सनाय (केसिया अंगस्टीफोलिया)

एक दस्तावर औषधीय फसल

सनाय को अरब देषों से भारत में लाया गया था। आजकल भारत का सनाय की खेती में विष्व में प्रथम स्थान है। भारत से प्रतिवर्ष 30 करोड़ रूपये से अधिक की सनाय की पत्तियों का निर्यात किया जाता है। यह लेगुमीनोसी कुल का पौधा है। जिसको हिन्दी में सनाय, अंग्रेजी में इण्डियन सेन्ना, राजस्थानी में सोनामुखी कहते हैं। सनाय का पौधा काँटेरहित व झाड़ीनुमा होता है, जिसकी ऊँचाई 2.0 से 4.0 फुट तथा शाखायें टेढ़ी-मेढ़ी होती हैं। शीत काल में चमकीले पीले रंग के फूल खिलते हैं। इसकी फली हल्के हरे रंग की होती है व पकने पर गहरे भूरे रंग की हो जाती है। बीज भी भूरे रंग के होते है। शुरू में इसकी खेती तमिलनाडु में शुरू हुई थी लेकिन अब यह केरल, मध्यप्रदेष, महाराष्ट्र तथा राजस्थान के काफी भागों में उगाया जा रहा है। हरियाणा के दक्षिण-पष्चिम भागों में इसकी खेती आसानी से की जा सकती है।अधिकतर बंजर भूमि में उगाये जाने के कारण इस औषधीय पौधे के लिये न तो ज्यादा पानी की आवष्यकता होती है और न ही खाद तथा विषेष देखभाल की जरूरत पड़ती है। इस पौधे को गाय, भैंस, हिरण व अन्य पशु आदि नहीं खाते हैं। इस प्रकार भारत के विभिन्न भागों में खाली पड़ी बंजर भूमि में इसकी खेती करके लाभ कमाया जा सकता है।

औषधीय उपयोग: सनाय अधिकतर एक रेचक (र्संजपअम) का कार्य करती हैं। इसकी पत्तियाँ तथा फलियों में सेनोसाइड पाए जाते हैं। सनाय की पत्तियों का मुख्य उपयोग पेट की बीमारियों से सम्बंधित दवाई बनाने में किया जाता हैं, परन्तु इससे अनेक अन्य किस्म की दवाईयाँ भी बनाई जा रही हैं जैसे पीलिया, अस्थमा, मलेरिया, बुखार, अपच आदि। चर्म रोगों में भी इसकी पत्तियों का उपयोग होता है। पत्तियाँ दस्तावर होती हैं।

जलवायु: इसकी खेती के लिये शुष्क जलवायु तथा कम वर्षा की आवष्यकता होती है। यह पौधा न्यूनतम 5.0 डिग्री सैंटीग्रेड तथा अधिकतम 50.0 डिग्री सैंटीग्रेड तक की गर्मी सहन करने की क्षमता रखता है। इसकी खेती के लिये 50 सैं. मी. वर्षा काफी रहती है। इसकी जड़ें जमीन में काफी नीचे तक चली जाती हैं 2-3 बार जुताई करके खरपतवार से मुक्त कर लेना चाहिये तथा सुहागा लगाकर खेत को समतल बना लें।

बिजाई का समय: इसकी बिजाई जुलाई के अन्तिम सप्ताह से लेकर अगस्त के अन्तिम सप्ताह तक भूमि: इसकी खेती के लिये रेतीली से लेकर दोमट मिट्टी अच्छी रहती है। अत: ऐसी जमीन जहाँ किसी प्रकार की खेती न होती हो तथा अन्य जगह जहाँ कोई फसल ले पाना संभव न हो, इसकी खेती के लिये उपयुक्त है। इसके लिये उचित जल निकास बहुत ही जरूरी है।

खेत की तैयारी: बिजाई से पहले खेत करनी चाहिये। सिंचित क्षेत्रों में इसकी बिजाई मार्च में भी की जा सकती है। मौनसून की अन्तिम बरसात के बाद इसका बोना ज्यादा लाभदायक होता है।

बीज की मात्रा: एक एकड़ के लिये लगभग 4 किलो बीज की आवष्यकता होती है।

किस्म: ए.एल.एफटी. 1, सोना एवं त्रिनवेली विकसित किस्में हैं।

बिजाई का तरीका: बिजाई से पहले बीज के जमाव का परीक्षण अवष्य कर लें। मौनसून की अन्तिम बरसात के तुरन्त बाद हल या ट्रेक्टर से लाईनों में बिजाई करें तथा लाईन से लाईन और पौधे से पौधे का फासला 30 सैं. मी. रखें। प्राय: 10-12 दिनों में अंकुरण हो जाता है। बीज को 1.5 से 2.0 सें. मी. से ज्यादा गहरा नहीं डालना चाहिये तथा बिजाई के समय खेत में अच्छी नमी होनी चाहिये। बिजाई से पहले बीज को 24 घंटे पानी में भीगोकर रखने व 2 घंटे छाँव में सूखा लेने पर जमाव जल्दी और अच्छा होता है।

खाद: खाद की कोई खास आवष्यकता नहीं पड़ती, परन्तु अच्छी फसल लेने के लिये 4-5 टन गली-सड़ी गोबर की खाद डालनी चाहिये।

सिंचाई: इस फसल में पूरे वर्ष 2-3 सिंचाई की जरूरत पड़ती हैं।

निराई-गुड़ाई: बिजाई के 25-30 दिन बाद निराई-गुड़ाई अवष्य करें, जिससे खरपतार नष्ट हो जायें। वर्ष में 2-3 बार निराई-गुड़ाई की आवष्यकता पड़ती है।

बीमारी तथा रोकथाम: सनाय की फसल में बीमारी से लड़ने की पूरी क्षमता होती है। इस फसल को दीमक व टिड्डी भी कम हानि पहुँचाती है। बरसात के दिनों में कभी-कभी इसकी पत्तियों पर काले धब्बे दिखते हैं। लेकिन किसानों को घबराना नहीं चाहिये। धूप निकलने पर अपने आप ठीक हो जाते हैं। कभी-कभी फूल खाने वाले कीड़ों का प्रकोप होता है। इसके लिए नीम के पत्तों/निंबोली का घोल या गोमूत्र को पानी में मिलाकर छिड़कने से लाभ होता है।

फसल की कटाई तथा संग्रह: फसल की कोई विषेष देखभाल की आवष्यकता नहीं पड़ती। बिजाई के लगभग 90-100 दिन बाद पत्तियाँ काटने योग्य हो जाती हैं। पौधों को 3?-4? जमीन से ऊपर तेज धार वाली हंसिया से काटना चाहिये। काटते समय ध्यान रहे कि पौधा उखड़ना नहीं चाहिये। काटते समय खेत की मिट्टी ज्यादा गिली नहीं होनी चाहिये। बाद की कटाईयाँ 60-70 दिन बाद करते रहना चाहिये। पौधों को काटकर छोटी-छोटी ढेरियां बना लेनी चाहिए। कटाई में देरी नहीं करनी चाहिए अन्यथा पुराने पत्ते झड़ने लगते है जिससे उपज कम होती है तथा पत्तों की गुणवत्ता भी प्रभावित होती है। पूरे वर्ष में चार कटाई तक ले सकते हैं। सर्दियों में पाला पड़ने का डर रहता है। अत: पहली कटाई पाला पड़ने से पहले करनी चाहिए। पौधों को छाया में सूखाने के 4-5 दिन बाद बड़ी-बड़ी ढेरियाँ बना लेनी चाहिये। इसके बाद तिरपाल बिछाकर, पत्ते झाड़ लेने चाहिये तथा पत्ते और डंठल अलग कर लेते हैं। पत्तों को अच्छी तरह सूखाकर बोरो में भरकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिये जहाँ पर नमी न पहुँचे।

बीज उत्पादन: किसानों को स्वयं अपना बीज तैयार करना चाहिये। खेत में अच्छे तथा स्वस्थ पौधों को छोड़ देना चाहिये तथा उन पर फलियाँ लगने दें। जब फलियाँ पक जाती हैं तो भूरे रंग की हो जाती है, तभी उनको तोड़कर 3-4 दिन तक धूप में सुखा लेना चाहिये। सुखने पर फलियों को हाथ द्वारा रगड़कर बीज को अलग करके बोने के लिये सुरक्षित रख लेना चाहिए।

उपज: सूखी पत्तियों का उत्पादन चार कटाई प्रति वर्ष करने पर 4-6 क्विंटल हो जाता है तथा 1.0 से 1.50 क्विंटल बीज भी मिल जाता है।

बाजार मूल्य: सूखी पत्तियों का बाजार भाव 20-25/- रूपये तथा बीज का भाव 50-60/- रूपये प्रति किलोग्राम है। खेती पर 4000-5000 रूपये प्रति एकड़ खर्चा हो जाता है। अत: सनाय की खेती से लगभग 10,000/- रू. प्रति एकड़ का शुद्ध लाभ होता है।

आई. एस. यादव, ओ. पी. यादव एवं जे. एस. हुड्डा
औषधीय, सगंध एवम् अल्प प्रयुक्त पौध संभाग
अनुवांषिकी एवं पौध प्रजनन विभाग
चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विष्वविद्यालय,
हिसार - 125 004

नींबू घास की वैज्ञानिक तकनीक द्वारा उन्नत खेती

आई. एस. यादव, ओ. पी. यादव एवं जे. एस. हुड्डा
औषधीय, सगंध एवम् अल्प प्रयुक्त पौध संभाग
अनुवांषिकी एवं पौध प्रजनन विभाग
सी. सी. एस. हरियाणा कृषि विष्वविद्यालय, हिसार - 125 004

भारत में इसे हरी चाय या गधंतराना के नाम से भी जाना जाता है। मुख्यत: इसकी दो प्रजातियाँ हैं। पहली पूर्वी भारतीय नींबू घास (सिम्बोपोगोन फ्लैकसुओसस) एवं अन्य प्रजाति सिम्बोपोगोन पैन्डुलस है, जिसे जम्मू लेमनघास के नाम से जाना जाता है। पूर्वी भारतीय नींबू घास का तना आधार के पास से बैंगनी रंग का होता है तथा पष्चिमी भारतीय नींबू घास का तना सफेद रंग का होता है। पहली प्रजाति का तेल गुणवत्ता में अच्छा पाया गया है। वर्तमान में लगभग 15000 एकड़ में इसकी खेती की जाती है, जिससे लगभग 600 टन तेल का उत्पादन होता है तथा 70 टन तेल का निर्यात किया जाता है। विष्व में लेमनघास का लगभग 1300 टन तेल का उत्पादन होता है इसकी खेती का अधिकांष भाग केरल, तमिलनाडु, कर्नाटक, आसाम, पष्चिमी बंगाल, उत्तरप्रदेष, महाराष्ट्र व मध्यप्रदेष में है। इसकी पत्तियों द्वारा निकाले गये तेल का मुख्य घटक सिट्रल ;ब्पजतंसद्ध है जो कि 75-85: तक होता है। दुनियाभर में चीन, ब्राजील, इंडोनेषिया, थाईलैंड एवं श्रीलंका प्रमुख उत्पादक देष है।

उपयोग: इसके तेल में उपस्थित सिट्रल से अल्फा आयोनोन एवं बीटा आयोनोन तैयार किये जाते हैं। अल्फा आयोनोन से गंध द्रव्य एवं कई संगध रसायन तैयार किये जाते हैं जिनका प्रयोग उच्चकोटि के इत्रों के निर्माण एवं सौन्दर्य प्रसाधनों, सौन्दर्य सामग्रियों तथा साबुनों के निर्माण में किया जाता है, जबकि बीटा आयोनोन बिटामिन ए बनाने में प्रयोग होता है।

जलवायु: गर्म एवं आर्द्र, खुली धूप एवं 200-250 सैं.मी. वार्षिक वर्षा अनिवार्य है।

भूमि: वैसे तो यह लगभग सभी प्रकार की भूमियों में लगाई जा सकती है परन्तु उपजाऊ दोमट मिट्टी जहां जल-भराव न हो, इसकी खेती हेतू ज्यादा उपयोगी है।

किस्म: आर आर एल-16, सी.के.पी. 25 (जम्मू), ओ. डी. 19, ओ. डी. 58 (केरल), कृष्णा, कावेरी, प्रगति, प्रमाण एवं प्रसून (लखनऊ) प्रमुख किस्में हैं। इनमें सी.के.पी.-25 सबसे ज्यादा तेल देने वाली किस्म है।

खेत की तैयारी: नींबू घास को पुराने स्वस्थ पौधों से ली गई स्लिप्स द्वारा लगाया जाता है। प्राय: एक बार लगा देने के बाद इसकी 4-5 साल तक सफ्लतापूर्वक कटाई ली जा सकती है। अत: खेत अच्छी तरह समतल किया हुआ तथा भूरभूरा तैयार होना चाहिये ताकि स्लिप्स की रोपाई भी अच्छी तरह हो तथा पानी भी खेत में आसानी से एक साथ समान मात्रा में लगाया जा सके।

खाद: नींबू घास कार्बनिक खेती के लिए 10 टन गोबर की सड़ी हुई या कम्पोस्ट खाद प्रति एकड़ उपयुक्त है तथा प्रत्येक कटाई के बाद 2 टन प्रति एकड़ देषी खाद डालकर पानी लगायें।

रोपाई की विधि: पुराने पौधों द्वारा ली गई स्लिप्स को 5-8 सैं.मी. गहरे गड्ढे करके सीधी लगानी चाहिये तथा स्लिप का निचला हिस्सा मिट्टी से पूरी तरह दबा दिया जाना चाहिये। रोपाई के बाद खेत में पानी अवश्य लगाएं, लेकिन पानी ज्यादा समय तक खेत में खड़ा नहीं रहना चाहिये। भूमि की उपजाऊ शक्ति के आधार पर स्लिप्स 60म30 या 60x45 सैं.मी. की दूरी पर लगायें।

सिंचाई: जड़ पकड़ लेने के बाद नींबू घास को ज्यादा पानी की आवश्यकता नहीं होती लेकिन अच्छी पैदावार लेने के लिए गर्मियों में 10 दिन तथा सर्दियों में 15 दिन बाद हल्का पानी लगायें ताकि नमी बनी रहे। इस प्रकार 4-5 कटाई ली जा सकती है। पानी की कमी वाले क्षेत्रों में 2-3 कटाईयाँ प्राप्त हो सकती है। प्रत्येक कटाई बाद पानी अवश्य लगायें। कटाई से 15 दिन पहले पानी लगाना बन्द कर दें।

निराई व गुड़ाई: आरम्भ में 2-3 गुड़ाईयाँ प्रत्येक सिंचाई के बाद करें तथा बाद में हर कटाई बाद एक गोड़ाई अच्छी प्रकार करें। आरम्भ में खरपतवार ज्यादा होती है जबकि बाद में इनकी मात्रा घट जाती है।

पौध-संरक्षण: दीमक से बचाव के लिए बिजाई से पूर्व खेत में फैनवेल डस्ट 40 प्रतिशत डाला जाना चाहिये। बाद में 2 लीटर क्लोरपाईरीफास को 20-25 किलो मिट्टी में मिलाकर खेत में छिड़क दें।

कटाई: उपजाऊ एवं सिंचित क्षेत्रों में पहली कटाई रोपाई के 90-100 दिन बाद ली जा सकती है। फसल को जमीन से 4-6 इंच ऊपर काटें। इसके बाद 45-60 दिन के अन्तराल पर कटाई ली जा सकती है। उपजाऊ भूमि व पानी की उपलब्धता के आधार पर 4-5 कटाई प्रति वर्ष ली जा सकती है। एक बार लगाने पर 5-6 सालों तक उत्पादन लिया जा सकता है। फसल को भूमि सतह से लगभग 10-15 सै. मी. ऊपर से काटना चाहिये।

तेल निकालना: इसके लिए तेल निकालने का संयत्र आवश्यक है। सभी सगंध पौधों का एक ही प्रकार के संयत्र से तेल निकाल सकते हैं। तेल आसवन विधि द्वारा निकाला जाता है तथा 4-6 घंटों का समय लगता है।

तेल की मात्रा: यह भूमि की उर्वरा शक्ति, जलवायु, प्रजाति एवं कटाई के समय पर निर्भर करता है। प्रथम वर्ष में लगभग 60 लीटर तेल प्रति एकड़ तथा बाद में 100 लीटर प्रति एकड़ प्राप्त किया जा सकता है।

तेल का भाव: गुणवत्ता के आधार पर 300-350 रुपये प्रति लीटर है।

शुद्ध लाभ: प्रथम वर्ष में लगभग 7000-8000 रूपये तथा बाद में 15000-18000 रूपये प्रति एकड़ शुद्ध लाभ प्राप्त किया जा सकता है।

सिट्रोनेला घास की अधिक उपज कैसे लें ?

आई. एस. यादव, ओ. पी. यादव एवं जे. एस. हुड्डा
औषधीय, सगंध एवम् अल्प प्रयुक्त पौध संभाग
अनुवांषिकी एवं पौध प्रजनन विभाग
सी. सी. एस. हरियाणा कृषि विष्वविद्यालय, हिसार - 125 004

इसको गैजनी भी कहा जाता है। इसकी दो प्रजातियाँ हैं - जावा सिट्रोनेला ;ब्लउइवचवहवद् पदजमतपंदनेद्ध और सीलोन सिट्रोनेला ;ब्लउइवचवहवद दंतकनेद्ध। जावा सिट्रोनेला के तेल में जिरेनियाल ;ळमतंदपंसद्ध की मात्रा अधिक (12-18:) होने के कारण सीलोन सिट्रोनेला की अपेक्षा अधिक उत्तम माना जाता है। अत: जावा सिट्रोनेला की खेती कर्नाटक, आसाम, महाराष्ट्र, तमिलनाडू, पष्चिमी बंगाल तथा उत्तरप्रदेष में की जाती है। यह पोयसी ;च्वंबमंमद्ध कुल की एक तना रहित बहुवर्षीय घास है जिसके पत्तों से तेल आसवित करके निकाला जाता है।

जावा सिट्रोनेला घास (सिम्बोपोगोन विन्टेरियानस) सम्पूर्ण विष्व में लगभग 1800 टन सिट्रोनेला तेल का उत्पादन होता है जिसमें से लगभग 600 टन तेल का उत्पादन भारत में होता है।

उपयोग: साबुन तथा क्रीम निर्माण में सुगंध हेतु, आडोमॉस, एंटीसेप्टीक क्रीम एवं अन्य सौन्दर्य प्रसाधनों के निर्माण हेतू किया जाता है।

जलवायु: उष्ण और आर्द्र जलवायु इसके लिए उपयुक्त है। जहाँ 200-250 सैं.मी. वर्षा प्रतिवर्ष हो।

भूमि: अच्छे पानी के निकास वाली बलुई दोमट तथा दोमट मिट्टी जिसका चभ् मान 6-7.5 हो।

किस्म: बायो-13, मंजूषा, मंजरी एवं मंदाकिनी ;ब्ध्प्डंच्ए लखनऊद्ध, जोर-3-1970 (जोरहट) विकसित किस्में हैं।

खेत की तैयारी: खेत भूरभुरा/बारीक तैयार किया हुआ तथा समतल होना चाहिये ताकि पानी ज्यादा समय तक खड़ा न रहे तथा एक समान लगे।

खाद: इसके लिए 10 टन गोबर की गली सड़ी खाद प्रति एकड़ पर्याप्त है। प्रत्येक कटाई के बाद दो टन प्रति एकड़ गोबर की खाद खेत में मिलायें।

रोपाई की विधि: पुराने स्वस्थ पौधे द्वारा ली गई स्लिप्स को 60ग45 या 60ग60 सैं.मी. की दूरी पर जमीन की उर्वरा शक्ति के आधार पर लगायें। रोपाई के तुरन्त बाद पानी लगायें।

सिंचाई: पौधे की अच्छी बढ़त एवं पैदावार के लिए काफी नमी की जरूरत होती है अत: वर्षा की उपलब्धता के हिसाब से समय-2 पर पानी लगाए। प्रत्येक कटाई के बाद भी जल्दी ही पानी लगायें। कटाई लेने से 15 दिन पहले पानी लगाना बन्द कर दें।

निराई व गुड़ाई: आरम्भ में खरपतवार निकालने के लिए 2-3 गुड़ाई जल्दी-जल्दी करें तथा प्रत्येक कटाई के बाद खोदी अवश्य करें।

पौध संरक्षण: दीमक से बचाव के लिए रोपाई से पूर्व क्लोरपाइरीफास का प्रयोग करें तथा चूहों की रोकथाम के लिए चूहेमार दवा का प्रयोग करें। तना छेदक कीड़ो की रोकथाम के लिए कार्बोफ्यूरान 3-जी का छिड़काव करें। लीफब्लाइट के लिए डायथेन एम-45 का 0.2: का छिड़काव करें।

कटाई: रोपाई के बाद प्रथम कटाई लगभग 4 महीने बाद तथा बाद की कटाईयां 2-3 मास के अन्तराल पर ली जानी चाहिये। अनुकूल परिस्थितियों में 4 कटाईयां ली जा सकती हैं जबकि सामान्य हालत में 3 कटाई ली जाती है। रोपाई के बाद 4 साल तक अच्छी पैदावार ली जा सकती है। फसल की कटाई जमीन से 15-20 सैं. मी. ऊपर से करें।

तेल निकालना: कटाई के बाद कुछ समय धूप लगाकर अन्य सगंध पौधों की तरह आसवन विधि द्वारा संयत्र से तेल निकाला जा सकता है।

तेल की मात्रा: पहले साल में 2-3 कटाईयों में लगभग 40-50 लीटर तेल प्रति एकड़ तथा बाद में 4-5 कटाईयों में लगभग 60-70 लीटर प्रति एकड़ प्राप्त किया जा सकता है।

तेल का भाव: गुणवत्ता के आधार पर औसतन 300-350 रुपये प्रति लीटर है। सिट्रोनेलाल तेल का मुख्य घटक (32-45:) है।

शुद्ध लाभ: प्रथम वर्ष में लगभग 7000-8000 रूपये तथा बाद में 10000-15000 रूपये तक प्रति एकड़ प्राप्त किया जा सकता है।